Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

जैसलमेर जिले का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पर्यटन – एक अध्ययन

वैभव इणखिया

चैण्क शोधार्थी (इतिहास)
एम.ए., एम.फिल, नेट (इतिहास)
राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर
(महाराजा गंगासिंह विष्वविद्यालय, बीकानेर)

शोध सांराष

जैसलमेर शहर भारत की प्रमुख रियासतों में से एक है। इस शहर का इतिहास बड़ा ही गौरवषाली रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से जैसलमेर रियासत अपने समकालिन रियासतों से इनके संबंध अच्छे व मधुर रहे थे। स्थापत्य कला की दृष्टि से जैसलमेर रियासत सिरमौर रही है। यहां पर स्थित सोनार दुर्ग अपनी स्थापत्य कला के कारण विष्व विख्यात है। आधुनिक और पारम्परिक वैभव का अभूतपूर्व संगम जैसलमेर में थार मरूस्थल चारों ओर फेला हुआ है। इस थार मरूस्थल के बीचों–बीच स्थित यह शहर जैसाण अपने यहां पर स्थित सोनार किले के कारण शानदार प्रतीत होता है।

एक नजर इस शहर पर डाले तो सभी मकान पीले पत्थर के कारण स्वर्णिम दिखाई देते है। त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित पीले पत्थरों से निर्मित सोनार किला समृद्ध और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है।

इस किले के पास शहर में स्थित हवेलियां व छतरियां भी अपनी स्थापत्य कला के कारण पूरे विष्व भर में प्रसिद्ध है।

वर्तमान समय में जैसलमेर को ऐतिहासिक ओर पर्यटन स्थल के रूप में देखने के लिए भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण संसार से पर्यटक पूरे साल आते रहते है।

इस कारण जैसलमेर शहर का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन बहुत महत्वपूर्ण है।

संकेताक्षरः–

सोनारगढ़, जैसाण, हवेलिया, झरोखे, स्थापत्य कला, हस्तषिल्प, तालाब, छतरियां और पाषाण।

परिचयः–

जैसलमेर शहर विष्व के पर्यटन मानचित्र पर सबसे ज्यादा चाहे जाने वाले गन्तव्य स्थानों में से एक के रूप में उभरा है। यह शहर पर्यटन के प्रत्येक रूप सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, मनोरंजन, व्यवसाय, खेलकूद एवं खरीददारी आदि की आवष्यकता की आवष्यकता की परिपूर्ति करता है। स्वर्णनगरी पीले पत्थरों का शहर जैसलमेर अपनी राजस्थानी संस्कृति और उसकी विरासत के भव्य प्रदर्षन का गवाह है। जहां स्वर्णिम अतीत के राजषाही व पुरावषेष और पुरातन वस्तुएं सावधानी पूर्वक परिक्षित है।

राजस्थान के पष्चिमी भू–भाग में स्थित यह मरू प्रदेष की भौगोलिक स्थिति का वर्णन हमें वैदिक साहित्य जैसे महाकाव्यों में प्राप्त होता है। इस प्रदेष को मरूमंडल, मारव, मरू और मरूकांतर के नाम से जानाा जाता था। जिसका तात्पर्य निर्जन स्थान या रेगिस्तान से है। इस मरू क्षेत्र ने अपनी भौगोलिक विषेषताओं के फलस्वरूप भारत के इतिहास में अपना एक अस्तित्व प्राप्त किया। जैसलमेर नगर की स्थापना का श्रेय रावल जैसलदेव को जाता है। इनके द्वारा वि.सं. 1212 श्रावण वदी 12 रविवार मूल नक्षत्र में ईसाल के कहने पर जैसलमेर शहर की नींव का पत्थर रखा। रावल जैसल द्वारा सर्वप्रथम लौद्रवा को अपने राज्य की राजधानी बनाया। [1]

रावल जैसलदेव द्वारा जैसलमेर के सोनार किले का निर्माण करवाया गया। इनके द्वारा निर्मित यह सोनारगढ़ भू–तल से 250 मीटर उंची पहाड़ी पर स्थित है। दुर्ग का दौहरा परकोटा है। इसमें कहीं भी चूने का प्रयोग नहीं किया गया है। सूर्य की किरणों का स्पर्ष पाकर यह किला सोने जैसा चमकता है। किले के ऊपर पहुंचने के लिए इसमें सूरजपोल, गणेषपोल और हवापोल तीनों द्वारों को पार करना पडता है। इस दुर्ग में लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर स्थित है। [2]

जैसलमेर गढ़ को त्रिकूटगढ़, गोरहरा तथा यहां की भूमि को मांडधरा कहा जाता है। [3]

जैसलमेर के प्राचीन नामों मे वल्लमंडल और मांड मिलते है। भाटियों का अद्भूत किला जिसे प्राचीन काल में गढ गोरहरा कहा जाता था। आज इसको सोनारगढ़ कहते है। इसके बारे में कहा गया है–

''गढ़ दिल्ली, गढ़ आगरों, अधगढ़ बीकानेर।

भलो चुणायो भाटियों, सिरजे तो जैसलमेर।।''[4]

यहां के भव्य राजाप्रासाद और भवनों की स्थापत्य कला के सर्वोत्तम नमूने है। जैसलमेर शहर में राजपूत स्थापत्य में अपनी निजी परम्पराओं का निर्वाह होता रहा। यह सभी पूरातन स्मारक आज भी ऐतिहासिक विरासत के रूप में संरक्षित है।

नगर के मोहल्ले, मठ, सामंतों की हवेलियां तथा परकोटे आदि को देखकर यह कहा जा सकता है कि नगर निर्माण योजनाबद्ध तरीके से हुआ है। [5]

सोनार दुर्ग धान्वन दुर्ग की श्रेणी में आता है। 99 बूर्जों वाला यह दुर्ग विषाल है। यहां पर स्थित लक्ष्मीनाथ मंदिर के सोने व चांदी के कपाट विषेष रूप से दर्षनीय है। जैसलमेर की दीवान सालिमसिंह की हवेली, दीवान नथमल की हवेली तथा पटवों की हवेली तो पत्थर पर की गई बारीक नक्काषी व जालियों, झरोखों के कारण विष्व प्रसिद्ध है। [6]

सोनार किले एंव हवेलियों के अलावा गड़ीसर तालाब, जैन मंदिर, लौद्रवा में स्थित जैन मंदिर एंव मूमल की मेड़ी, छत्रेल गांव में स्थित सुमल की मेड़ी यहां के प्रमुख पर्यटन स्थल है। वर्तमान जैसलमेर के आसपास का प्रदेष मांड प्रदेष भी कहलाता रहा है। इस प्रदेष के लिए 'मांड' शब्द का प्रयोग 'घंटियाला' अभिलेख में हुआ है। [7]

भाटी शासकों की नौ राजधानियां रही है। जो कि इस दौहे में अभिव्यक्त है–

''काशी, मथुरा, प्रयागवड़, गजनी अरू भटनेर।

दिगम, देरावल, लौद्रवो, नवा जैसलमेर।।''

लौद्रवा जैसलमेर की तीन सौ वर्षों (सन् 1156 ईस्वी तक) तक भाटियों की राजधानी रही। [8]

नगर की सुरक्षा हेतु महारावल अखैसिंह ने विक्रम संवत 1796 में शहर के परकोटे का निर्माण आरंभ करवाया जो कि महारावल मूलराज द्वितीय के समय पूरा हुआ था। जैसलमेर नगर के चारों ओर चार प्रोले थी–

अमरसागर प्रोल, भेरों की प्रोल, मलका प्रोल और घड़सीसर प्रोल स्थित है। [9]

जैसलमेर शहर से 45 किमी दूर सम के रेतीले धोरे स्थित है। जहां पर ऊंटों की सवारी और जीप सफारी के लिए प्रसिद्ध है। जैसलमेर में शाही रेलगाड़ी, हवाई सुविधा एवं डेजर्ट ट्रांईएंगल के कारण परिवहन की सुलभता एवं सुविधाओं ने देषी–विदेषी पर्यटकों को अपनी ओर आकृषित किया है। जैसलमेर शहर व सम गांव मे विभिन्न श्रेणी के होटलों एवं रिसॉर्ट सम्मिलित है। पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए जैसलमेर की स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जैसलमेर में सनातन धर्म का प्राचीन मंदिर दुर्ग में स्थित 'आदिनारायण' मंदिर है। जो कि 'टीकमराय' के मंदिर के नाम से विख्यात है। यहां भगवान विष्णु की अष्टधातु की प्रतिमा स्थापित है। [10]

हस्तषिल्प, ट्रेवल्स व होटल व्यवसाय को प्रोत्साहन मिला है। जैसलमेर में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के अलावा भी प्राकृतिक सौन्दर्यात्मक स्थल भी है। बड़ा बाग का तालाब, जैतसर तालाब, मरू उद्यान एवं लाणेला गांव का घुड़ दौड़ का रण क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है। इनके अलावा जैसलमेर के तनोट क्षेत्र में स्थित तनोट राय माता जी की मंदिर विष्वविख्यात है।

उद्देष्यः–

जैसलमेर के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों एवं सांस्कृतिक परंपराओं को बदलते हुए स्वरूप में पर्यटन का विकास करना एवं जैसलमेर के इन स्थलों को पर्यटन पटल पर लाना। जैसलमेर की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पर्यटन इमारतों, हवेलियों एवं किलों का संरक्षण करना एवं उनका सही रख–रखाव करना एवं जैसलमेर शहर की सांस्कृतिक परम्पराओं, मरू महोत्सव एंव यहां की कला संस्कृति की समोचित जानकारी उपलब्ध करना। पर्यटन में बढ़ोतरी होगी तो इस शहर में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। जिससे राजस्थान की अर्थव्यवस्था में भी जैसलमेर के पर्यटन उद्योग का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

राजस्थान के पर्यटन ने विषेषकर जैसलमेर क्षेत्र में हमेषा देषी–विदेषी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। इसमे यहां के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पर्यटन का स्थान महत्वपूर्ण है। जैसलमेर शहर में पर्यटन की अपार संभावनाएं है। इस शौद्य पत्र के माध्यम से मेरा उद्देष्य जैसलमेर के पर्यटन के क्षेत्र को बढ़ावा देना एवं इस ऐतिहासिक नगर की सांस्कृतिक व स्थापत्य कला को जन–जन तक पहुंचाना मेरा प्रमुख उद्देष्य रहा है।

सुझावः–

1. जैसलमेर में स्थित विरासत स्थलों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
2. जैसलमेर के विरासत स्थलों की प्रकृति को भूलना नहीं चाहिए। विरासत स्थलों एवं उनके इतिहास के बारे में बताने के लिए थियेटर उपलब्ध होने चाहिए।
3. पर्यटन स्थलों के मूल स्वरूप में ही उन्हें संरक्षित करने के प्रयास करने चाहिए तथा उनकी पुरातात्विक महत्व को समझाना चाहिए।
4. ऐतिहासिक धरोहरों व हवेलियों के पास पर्यटकों के लिए राष्ट्रीयकृत बैंकों के एटीएम की सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।
5. जैसलमेर शहर के ऐतिहासिक स्थलों के पास एवं मार्गों पर पार्किंग की सुविधा की जाए।
6. ऐतिहासिक स्थलों की तरफ जाने वाले रास्तों पर स्वच्छता तथा सांकेतिक विज्ञापनों को लगाकर पर्यटकों को आकर्षित करने का कार्य करना चाहिए।
7. पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छता और डिजीटल तकनीक का समावेष करना।

8. म्यूजियम, लाइट एंड साउण्ड शो और आधुनिक परिवहन सुविधाओं का विकास करना।
9. पर्यटन के क्षेत्र में विकास के लिए पर्यटन स्टार्टअप और उद्यमियों को विषेष अनुदान देना।
10. स्थानीय कला, संस्कृति व हस्तषिल्प को बढ़ावा देने पर विषेष ध्यान देना।

निष्कर्षः–

स्वर्णनगरी नाम से प्रसिद्ध यह जैसलमेर शहर अपनी पहचान यहां के किलों, महलों, हवेलियों, तालाबों, छतरियों एवं पुराने घरों में लगे पत्थरों से निर्मित झरोखों, बालकनियों एवं ओटलों से होती है। 12वीं शताब्दी का विषालकाय सोनार दुर्ग त्रिकुट पहाड़ी पर निर्मित 99 बूर्जों वाला शानदार प्रतीत होता है। इनको देखने बड़ी संख्या में नगरवासी व पर्यटक इस किले में आते है। पिछले कुछ वर्षों मे जैसलमेर शहर ने अपनी खादी व हस्तषिल्प कला में भी अपनी विषिष्ट पहचान कायम की है। यहां के स्थानीय स्थापत्य कला के प्रेमी लोगों द्वारा अपनी कारीगरी से इस शहर में घरों, महलों एवं होटलों को अपनी कारीगरी से निर्मित किया है। जैसलमेर राजस्थान राज्य का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। भारत आने वाला हर एक पर्यटक जैसलमेर आने को लालायित रहता है।

पिछले कुछ वर्षों से यहां पर पर्यटकों की आवाजाही में बढ़ोतरी हुई है। विष्वप्रसिद्ध पर्यटन स्थल जोधपुर का सामीप्य का लाभ भी जैसलमेर को प्राप्त हुआ है। राजस्थान में जैसलमेर शहर की सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जैसलमेर क्षेत्र में यहां के स्थानीय कलाकारों ने जिनको मांगणियार कहते है। इनमे गायक अनवर खां बईया और हमीरा गांव के कमायचा वादक शाकर खां पदमश्री पुरस्कर से नवाजे जा चुके है। आधुनिक पर्यटन का यही एक मूल मंत्र है कि यहां की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक पर्यटन का मूल आधार हमारी संस्कृति है। यहां का प्राकृतिक परिवेष, हस्तषिल्प, चित्रकला, लोकसंगीत, लोकसाहित्य, यहां का रहन–सहन, वेषभूषा, मरू महोत्सव, त्योहार आदि यहां की सांस्कृतिक पर्यटन की विरासत है। इन्हीं के कारण यहां पर पर्यटक आते है। जहां–जहां पर पर्यटन का विकास हुआ है वहां–वहां लोगों के जीवन स्तर में महत्वपूर्ण सुधार आया है। पर्यटन में सुधार के लिए यहां की स्थापत्य कला का संरक्षण व संस्कृति का संरक्षण किया जाए तो पर्यटन के क्षेत्र में निरंतर वृद्धि होती रहेगी एवं जैसलमेर की अर्थव्यवस्था में भी इसका शानदार प्रभाव पड़ेगा।

जिले में होने वाले मरू महोत्सव के आयोजन से भी नये निवेष और व्यापक रोजगार के अवसर प्रदान होते है। इनसे पर्यटन क्षेत्र मे काफी फायदा हुआ है। राज्य सरकार की योजनाओं से भी जैसलमेर जिले की सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहरों को संरक्षण मिल रहा है। प्राचीन संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहरों से समृद्ध जैसाण में ऐसी पुरातन एवं वैभवषाली परम्परा दूनिया में कहीं और देखने को नहीं मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. ''जैसल'' माहेष्वरी हरिवल्लभ– जैसलमेर का इतिहास, द हैरिटेज ग्वालियर, 1999 पृष्ठ संख्या– 20, 21, 22
2. सिंह, वीरेन्द्र– जैसलमेर राजघराने का केन्द्रीय सता से संबंध, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण, 2003, पृष्ठ संख्या– 24
3. शर्मा, नन्द किषोर– जैसलमेर का राजनैतिक इतिहास, सीमांत प्रकाषन, प्रथम संस्करण, 1993 पृष्ठ संख्या– 353
4. भाटी, रघुवीरसिंह– जैसलमेर की सांस्कृतिक धरोहर, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण, 2010, पृष्ठ संख्या– 86
5. शर्मा, नंदकिषोर – जैसलमेर का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, सीमांत प्रकाषन जोधपुर, प्रथम संस्करण, 1993, पृष्ठ संख्या– 179
6. जैन, रमेष व शर्मा, केलाष– राजस्थान की सांस्कृतिक परम्पराएं एवं विरासत, मलिक एण्ड कंपनी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2018, पृष्ठ संख्या– 117

7. 'मयंक', मांगीलाल व्यास– जैसलमेर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, द्वितीय संस्करण, 2011, पृष्ठ संख्या– 8
8. भाटी, हरिसिंह– गजनी से जैसलमेर, प्रथम संस्करण, 1998, पृष्ठ संख्या– 154, 373
9. शर्मा, नन्दकिषोर–झरोखों की नगरी, सीमांत प्रकाषन, जोधपुर, पृष्ठ संख्या– 22, 23
10. सुथार, भुराराम– जैसलमेर के श्रृंगारिक लोकगीत, अंकूर प्रकाषन, उदयपुर, 2008, पृष्ठ संख्या– 69